अधिगम असमर्थता का शिक्षण
Teaching of Learning Disabilities

अधिगम के समावेशी शिक्षा में शिक्षण अभ्यास के लिए तरीके निम्नलिखित हैं-

(i) सहयोगी अनुदेशन
(ii) सहयोगी अनुशिक्षण
(iii) सहकारी अधिगम
(iv) सहकारी शिक्षण

(i) सहयोगी अनुदेशन (Collaborative Teaching)

सहयोगी अनुदेशन समावेशी अनुदेशन का एक अहम् भाग है। सहयोग आवश्यक रूप से एक प्रक्रिया है, जहां अध्यापक मिला-जुला अर्थ / कार्यक्रम विकसित करता है, और एक सहयोगात्मक ढंग से उसे लागू करने का प्रयास करता है। यह केवल सकारात्मक वार्तालाप, सलाह मशविरे एवं संचार से ही हासिल किया जा सकता है।

सहयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार का हो सकता है। अप्रत्यक्ष सहयोग कक्षा से बाहर अध्यापक द्वारा बच्चों की आवश्यकता पूर्ति के लिए योजना बनाने से

संबंध रखता है। सहयोगी अलावा समकक्ष सहयोगी और अध्यापक सहयोग की दीमें अप्रत्यक्ष सहयोग के रूप में हैं। इस प्रक्रिया में बालक एवं अध्यापक के द्वारा सहयोग प्राप्त करके शिक्षण प्रक्रिया को चलाया जाता है।

(ii) सहयोगी अनुशिक्षण (PEER TUTORING)

अनुशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे एक से एक को अनुदेशन या अधिगम किया जाता है। यह प्रक्रिया विद्यालयों में समावेशन को प्रोत्साहित करती है। इसमें एक व्यक्ति जो वरिष्ठ या पुराना विद्यार्थी या विशेषज्ञ अध्यापक अनुशिक्षक की भूमिका में होता है और अधिगमकर्ता वह होता है, जो निर्देशन ग्रहण करता है। अनुशिक्षण बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लिया जाता है, जिसमें बालक को निदानात्मक एवं सहयोगात्मक निर्देशन किया जाता है।

इस प्रक्रिया में बालक एक दूसरे बालक को एक-एक कर पढ़ाते हैं। यह आयु भेद या सम आयु प्रकार का अनुशिक्षण होता है। आयु भेद अनुशिक्षण उस निर्देशनात्मक स्थिति से संबंध रखता है, जिसमें समकक्ष उत्कृष्ट बालक अपने से छोटे व निम्न स्तर

ARYAN Page No. Date

के बालकों को निर्देशन करते हैं या अनुशीलन करते हैं। समआयु अनुशिक्षण वह निर्देशन होता है, जिसमें अनुशिक्षण प्रक्रिया में समान आयु के या स्तर के बालकों का अनुदेशन शामिल होता है। जिस प्रकार का भी सहयोगी अनुशिक्षण अपनाया जाता है वह दो बार वर्तनी, हस्तलेखन, अंकगणित को सिखाने का प्रयोग करता है।

सहयोगी अनुशिक्षण के उद्देश्य :-

सहयोगी अनुशिक्षण के उद्देश्यों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों के ज्ञानात्मक पहलू शामिल हो सकते हैं।

a. ज्ञानात्मक क्षेत्र - ज्ञानात्मक कौशल सिखाना जैसे वर्तनी, हस्तलेखन इत्यादि।

b. सामाजिक क्षेत्र :- बालक के सामाजिक व्यवहार को सुधारना जैसे भाईचारा, सहयोग, परस्पर सम्मान इत्यादि। इसके उद्देश्य भले जो भी हो परन्तु इसे कक्षा शिक्षण का प्रतिस्थापक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि अनुशिक्षक को निदानात्मक निर्देशन

कर सहभागी की भूमिका निभानी चाहिए।

अनुशिक्षण की प्रक्रियाएँ :- अनुशिक्षण की मुख्यतः तीन प्रक्रिया अपनायी जा सकती है-

(i) देखकर करने की प्रक्रिया।

(ii) परीक्षण-शिक्षण-परीक्षण प्रक्रिया।

(iii) युग्म-अनुदेशन प्रक्रिया।

(i) देखकर करने की प्रक्रिया :- यह एक नियमित प्रक्रिया है, जो कार्य के प्रदर्शन से जुड़ी है, जिसके उपरान्त बालक को वह कार्य स्वयं करना होता है। यह पूर्णतया स्पष्ट मोडलिंग प्रक्रिया है, जिसके द्वारा लगभग सभी विद्यार्थियों को सीखने में कोई परेशानी नहीं होती। अनुशिक्षक को पहला सिद्धान्त जो लागू करना चाहिए वह है कि उन्हें छोटे चरणों में पढ़ाना चाहिए और प्रदर्शन कुछ इस प्रकार करना चाहिए, जिससे बालक सभी चरणों को आपस में जोड़ सके। दूसरा महत्वपूर्ण कार्य अनुशिक्षक द्वारा यह सुनिश्चित करना है कि बालक हर चरण के पूरा होते ही कार्य करे, और बालक कार्य को पूरा करते

ARYAN

ही शिक्षक को दिखाए।

(ii) परीक्षण - शिक्षण - परीक्षण प्रक्रिया :- यह प्रक्रिया तीन चरणों में पूर्ण होता है। सर्व-प्रथम अनुशिक्षक यह परीक्षण करता है कि क्या विद्यार्थी आवश्यक कार्य को कर सकता है या नहीं। दूसरा चरण निर्देशनात्मक होता है, तथा तीसरा चरण अनुशिक्षित का पश्चात परीक्षण किया जाता है।

(iii) युग्म अनुदेशन प्रक्रिया :- इस प्रक्रिया में अनुशिक्षक एवं विद्यार्थी शामिल होते हैं। अनु-शिक्षक दिए गए कार्य को करता है और फिर अनुशिक्षित उस कार्य को करता है, इसके बाद अनुशिक्षक तीसरे कार्य को और फिर यही सिलसिला आगे भी तब तक चलता है, जब तक कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। इसमें विद्यार्थी अनुशिक्षक के अनुसार अपने व्यवहार को ढालता है। यह नियमित सफल कार्य करती है, यह केवल तभी हो पाता है जब पाठ्यक्रम अच्छे

स्तर का हो और विद्यार्थी की
योग्यता से मेल खाता हो।